International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-07-2021, Accepted: 05-08-2021, Published: 21-08-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 143-146

नव विमर्श में बदलते दाम्पत्य संबंध का नाट्य दृष्टि से अध्ययन

डॉ. वनिता कुमारी

पीएचडी स्कॉलर, सिंघानिया यूनिवर्सिटी, पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

आधुनिककाल से पहले यदि प्राचीन काल में दाम्पत्य संबंधों की बात करें तो निश्चित ही स्त्रियों का व्यक्तित्व सुरक्षित रहा होगा| वह अपना वर स्वयं चुन सकती थी| सीता हो, कुंती हो अथवा कोई सुकन्या, सभी को स्वयंवर का अधिकार रहा था| प्राचीन काल से ही विवाह के बाद स्त्रियों का पति के घर पूरा अधिकार हो जाता था| वह पति की हर तरफ से सहायता करती थी| सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं उस समय दाम्पत्य के संबंध अच्छे थे| लेकिन मध्यकाल में इनके संबंधों में बदलाव आना शुरू हो गया था| हिन्दू-मुसलमान दोनों में पर्दा-प्रथा एवं बाल-विवाह का प्रचलन होने लगा| स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था| छोटी लडकियां ही कुछ शिक्षा ग्रहण कर पाती थीं| उस समय के लड़के-लडकियों की शिक्षा के विषय में डी.एन मजूमदार और रायचौधरी ने अपनी रचना 'स्त्री संघर्ष का इतिहास' में लिखते हैं कि

> प्राय: प्रत्येक मस्जिद में संलग्न मकतब था जिसमें आस-पास के बालक और बालिकाएं शिक्षा ग्रहण करते थे| शाही घराने और धनी अमीरों की लडकियां अपने घरों में ही शिक्षा प्राप्त करती थीं और हम यह मान सकते हैं कि हिन्दुओं के मध्यम वर्ग की लडकियां स्कूलों में लडकों के साथ प्रथमिक शिक्षा प्राप्त करती थीं और उनमें से कुछ धार्मिक साहित्य का ज्ञान भी था| (मजुमदार 13)

आधुनिक काल में दाम्पत्य संबंधों में बहुत बदलाव आ गया है| आज की स्त्री पढ़ी-लिखी होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के बराबर काम करती है| आज के पुरुष को स्त्री की कमाई तो अच्छी लगती है लेकिन उसका बाहर किसी अन्य व्यक्तियों के साथ बातचीत करने को बुरा मनाते हैं और उसे शक की नज़र से देखते हैं| आज के समाज में दाम्पत्य के टकराव का मुख्य कारण ही यही है| आधुनिक परिवारों में पति-पत्नी के संबंध में संघर्ष का स्वरूप बहुतात से देखने को मिल रहा है| स्त्री और पुरुष अतिनिकटता के सूत्र में बंधकर भी अज़नबी के रूप में निर्वाह करने की नियति से अभिशप्त है| दोनों एक दूसरे के होने में नहीं, न होने के बोध से टूटते हैं| उनके बीच अगर कहीं संबंध के पर्दे की कोई झलक है तो सिर्फ लोगों की नज़र में है|

यदि इसी दाम्पत्य संबंधों को हम गद्य की नाट्य साहित्य विधा की दृष्टि से प्रस्तुत करें तो साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्य वहीं रचा जाता है जो साहित्यकार समाज में अनुभव करता है| आधुनिक नाटकों में दाम्पत्य संबंध देखने से पहले हम अतीत के नाटकों का अध्ययन अवश्य करेंगे जिससे इस के बदलाव को प्रत्यक्ष देखा जा सके| हिन्दी नाटकों के इतिहास में देखें तो मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' की कथा इस विषय से संबंधित है| इसमें मध्यवर्गीय परिवार का चित्र प्रस्तुत किया गया है| इस नाटक का मुख्य पात्र महेन्द्रनाथ है जो सवित्री से बहुत प्रेम करता है और सवित्री भी उसे चाहती है लेकिन शादी के बाद महेन्द्र को बहुत नज़दीकी से जानती है तो उसको हीन भाव से देखने लग जाती है| महेंद्र का बेरोजगार हो जाने के कारण उसका तनाव ओर बढ़ जाता

है| क्योंकि अब घर चलाने का बोझ सवित्री पर आ जाता है| सवित्री पति-पत्नी के संबंधों को बहुत नीचे स्तर पर प्रस्तुत करती है, ओम पुरी सवित्री के माध्यम से कहता है कि

> एक ओर घर चलाने का असहय बोझ है तो दूसरी ओर ज़िन्दगी में कुछ भी हासिल न कर पाने की तीखी कचोट| अपने बच्चों के बर्ताव से अत्यन्ततिक्त हुई सवित्री बची-खुची ज़िन्दगी को एक पूरे, सम्पूर्ण पुरुष के साथ बिताने की आकांक्षा रखती है| (मोहन राकेश के नाटक में ओम पुरी का वाक्य पृष्ठ-7)

मोहन राकेश ने अपनी रचना 'साहित्य और संस्कृति' में आधे-अधूरे नाटक के विषय में लिखा है कि "मैंने एक शब्द भी ऐसा नहीं लिखा जो वर्तमान से संबंधित नहीं है|" (राकेश 150) हिन्दी नाटकों में बदलते दाम्पत्य के संबंधों के स्वरूप को यदि हम डॉ. लक्ष्मी नारायण के नाटकों में देखें तो 'मादा कैक्टस' में नयी पीढ़ी की ओर संकेत किया है जो अपने विरोधों की घुटन में अपने विकास की अभिलाषा में जी रहीं है और उसे अभिशाप के रूप में भोग रहीं है| इस नाटक की पात्र अरविन्द ऐसे ही मानवीय जीवन की गिरफ्त में है| इस नाटक में दाम्पत्य के द्वंद्व को उभारा गया है| अरविन्द एक चित्रकार है वह सदैव अपनी कला-साधना में रत रहता है| वह अपनी पत्नी सुजाता को त्याग देता है क्योंकि वह मानता है कि वह उसकी कला में बाधक है और उसे तलाक दे देता है| बाद में अरविन्द महसूस करता है कि कलाकार को पत्नी की नहीं प्रेमिका की जरूरत है और मीनाक्षी नाम की लड़की को प्रेमिका बना कर रखता है| मीनाक्षी ही अरविन्द को कहती है-

> अरविन्द: मैं समझता हूँ कि आप पहले आर्टिस्ट है, फिर स्त्री|
> मीनाक्षी- पहले मैं स्त्री हूँ, और बाद में भी वहीं एक .....| (लाल 47)

इस प्रकार यदि वर्तमान हिन्दी नाटकों के माध्यम से आधुनिक युग के दाम्पत्य के संबंधों के स्वरूप को प्रस्तुत करें तो इसमें कोई खास बदलाव नहीं आया| सुशील कुमार का नाटक 'चार यारों के यार' इसी दशा को प्रस्तुत करता है| यौन-संबंधों के धरातल पर लिखित यह नाटक यह सोचने को मजबूर कर देता है कि क्या दाम्पत्य (पति-पत्नी) के संबंध का आधार केवल यौन-तुष्टि ही है| इस नाटक की कथा के अनुसार एक बिन्दिया नामक पात्र अपने पहले पति को इसलिए छोड़ देती है कि वह शराब बहुत पीता था लेकिन दूसरी शादी बहुत अच्छे व्यक्ति जो के मास्टर भी लगा हुआ है से करती है| शादी करने के बाद भी उसे मानसिक ख़ुशी नहीं मिलती, जिसके कारण वह अन्य पुरुषों के संबंध में आती है और अपने पुरुष की हत्या कर देती है| नाटक की नायिका नाटक के प्रारम्भ में ही इस प्रकार के संबंधों को सम्बोधित करती हुई कहती है कि-

> मैंने अपने पति की निम्र हत्या की है| उस पति की हत्या जो मुझसे बेहद प्यार करता था ..... अटूट विश्वास करता था| फिर भी मैंने उसकी हत्या की| उसके प्यार की हत्या की| उसके विश्वास की हत्या की| अपने इस शरीर के कारण जो कि वासना का अथाह कुंड है| अपने उन चार यारों की खातिर जिनको यह शरीर मैंने पूरी तरह समर्पित कर रखा था और उस काम-कीड़ा में, मैं उन चार यारों की यार थी| उन्होंने मेरे शरीर को जैसे चाहा वैसा भोगा| (कुमार 3)

इस नाटक के विषय में डॉ. नगेन्द्रनाथ तिवारी ने अपनी रचना 'साठोतरी हिन्दी नाटकों में दाम्पत्य संबंध' में लिखते हैं कि

> चार चारों के चार जैसी नाट्य-कृतियाँ नाटककार की विकृत मनोवृत्ति अथवा उच्च वर्ग के कुछ गिने-चुने लोगों की विकृत मानसिकता को ही उदघाटित करती है| इन जैसे अन्य नाटकों में जिस कथ्य की अभिव्यक्ति हुई है, वह भारतीय समाज में अभी विशेष मान्य नहीं है|

> अपवाद स्वरूप स्थितियों के चित्रण तथा पश्चिमी सभ्यता और फैशन के अन्धानुकरण से इन नाटककारों को तत्कालीन ख्याति भले ही प्राप्त हो गई हो, पर यह चिरन्तन महत्त्व नहीं पा सकेगे| (तिवारी 226)

यदि पंजाबी नाटकों में इस समस्या की बात करें तो दाम्पत्य कथा से संबंधित काफी नाटक की रचना पंजाबी साहित्य में हुई है| पंजाबी नाट्य साहित्य की समीक्षा करें तो पहले युग से लेकर आधुनिक युग तक भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से नाटककारों ने अपने नाटकों में इस समस्या को प्रस्तुत किया है| हमारे समाज की प्राचीन से आधुनिक युग तक यहीं स्थिति रही है कि प्रेम संबंधी विवाह को हमारा समाज पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं करता, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि कुछ कारण ऐसे हैं जो प्रेम संबंधों में रुकावट बनते हैं| चाहे औरत और मर्द में कितना भी प्यार क्यों न करते हो यह ऊँच-नीच की भावना बनी रहती है| आधुनिक समाज का पढ़ा-लिखा युवा वर्ग भी इस कारण से ही अपने जज्बातों को दबा लेते हैं कि इसको समाज ने स्वीकार नहीं करना बस कुछ थोडे से लोग ही समाज को चुनौती देते हैं, प्रेम विवाह का संबंध जोड़ते है|

ऐसे ही इस विषय से संबंधित अतीत के पंजाबी नाटकों में बलवंत गार्गी का 'लोहा कुट' है जो उस समय के दाम्पत्य संबंधों के स्वरूप को प्रस्तुत करता है| इस नाटक के माध्यम से गार्गी ने नारी के दिल में उठने वाली प्रेम भावना को बड़ी गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया है| इस नाटक में संती नामक एक स्त्री जो कि लुहार जाति से संबंधित है और वह अपने गाँवों के गज्जन सिंह नामक व्यक्ति से प्यार कर बैठती है| गज्जन सिंह लुहार जाति का न हो कर जाट जाति का था| संती के घर वालों को जब यह पता चलता है तो वह जल्दी से संती की शादी अपने गांव से चार-पांच किलोमीटर दूर काकू लुहार से कर देते हैं| विवाह के बाद संती अपने अतीत को भुला कर काकू के साथ गृहस्थी जीवन निभाने की कोशिश करती है| इस प्रकार काकू और संती दोनों बीस वर्ष अच्छे से व्यतीत करते हैं| गज्जन काफी उम्र का हो जाता है लेकिन वह खेती के संदो के बहाने काकू लुहार की दुकान पे आकर बैठ जाता है और संती को देखता रहता है| संती की बेटी बैनो भी गांव के किसी लड़के से प्यार करने लग जाती है और अपने माँ-बाप की मर्जी के खिलाफ सरबन नामक व्यक्ति के साथ रहने के लिए चली जाती है और अपनी माता संती से कहती है-

> बैनो: तुम मुझे तोरना चाहती हो उस लुहार के बेटे के साथ ? भठी की राख में सारी ज़िन्दगी गालने के लिए| जो तूं है, वह मैं नहीं बनना चाहती| जितना मर्जी रोक ले, मैं तो सरबन को मिलूगी| (गार्गी 43)

बैनो की प्रेम भावना देख कर संती के अंदर भी गज्जन के प्रति प्रेम जाग जाता है और वह भी अपने आशक के साथ भागने को त्यार हो जाती है| प्रो. ब्रह्मजगदीश सिंह अपनी रचना 'बलवंत गार्गी नाट-रचना' में लिखते हैं

> संती सोचती है कि समाज ने बैनो का क्या बिगाड़ लिया ? उसे भी यह जुर्रत करनी चाहिए थी| ऐसी बातों में गोते खाती हुई वह भी एक दिन गज्जन के साथ भाग जाने का फैसला कर लेती है और इस प्रकार एक माँ अपने बेटी से प्रेरणा लेकर 18-20 वर्ष पुराने पति का घर सदा के लिए छोड़ कर अपने प्रेमी गज्जन के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए चली जाती है| (सिंह 21)

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पुरुष प्रधान समाज में दाम्पत्य के संबंधों का एक पक्ष यह भी है, जो किसी न किसी समय हमारे समाज में घटित हुआ करता था| यदि वर्तमान पंजाबी नाटकों के द्वारा आधुनिक दाम्पत्य संबंधों के स्वरूप की बात करें तो इस विषय से संबंधित गुरचरन सिंह जसूजा का नाटक 'परियां' है इस नाटक में उन्होंने दाम्पत्य की दशा का वर्णन किया| इस नाटक में नाटककार ने कल्पना का आधार लेते हुए लिखा है कि जिस स्त्री के साथ बुरा व्यवहार होता है उसके पंख अपने आप आ जाते

हैं और वह स्त्री से परी बन जाती है भाव वह स्त्री जागृत हो जाती है| इस नाटक में काफी स्त्रियाँ पात्र है जिन के साथ किसी न किसी दशा में पुरुषों के द्वारा बुरा व्यवहार किया गया है और उन्होंने परियां का रूप ग्रहण कर लिया| लेकिन इन सब में सबसे तरस योग स्थिति मिसिज मेहता की है| मिसिज मेहता का पति बलवंत नशे का आदी है और उसने शादी के बाद उसे बहुत परेशान किया उसे पीटा बाद में किसी जुर्म के तहत उसे जेल हो जाती है| मिसिज मेहता बड़ी मुश्किल से अपनी दोनों बेटियों को पालती है| जब जेल से रिहा होने के बाद उसका पति फिर मिसिज मेहता के पास आ जाता है तो वार्तालाप के अनुसार-

> बलवंत: पुरानी बातों को फरोलने का कोई फ़ायदा नहीं| तुम तो बड़े जिगरे वाली औरत हो, धरती समान|
> मिसिज मेहता: हाँ, मैं बड़े जिगरे वाली हूँ| मैंने तुझे सुधारने का बहुत यत्न किया, परन्तु मेरे तरलों का तुम्हारे ऊपर कोई असर नहीं हुआ| तुम्हारी बुरी आदतों ने घर को उजाड़ दिया| यदि घर का खर्च चलाने के लिए मैंने नौकरी की, तो तुमने मेरे चरित्र पर झूठी तोहमत पाई| तुम्हारी शक भरी नज़रे हमें काँटों के समान चुबने लगी| (जसूजा 79)

मिसेज मेहता को अपने पति के द्वारा दिए सभी कष्ट याद आते हैं और वह सब याद कर अपना दिल हल्का कर रहीं है| मिसेज मेहता कहती है –

कैसे भूल जाऊ ? तेरे साथ रह कर मैं गली के कचरे से भी होली हो गई| शराब के नशे में तुमने मेरे शरीर के चीथड़े उडाए| बेटियों के जन्म के दोष में मुझे लाठियों से पीटा गया| इसमें मेरे क्या दोष था ? (खूब रोती है) तेरी पशुओं की तरह मार, मुझे कैसे भूल सकती ऐ ? (जसूजा 80)

निष्कर्ष रूप से कहें तो इन हिन्दी और पंजाबी नाटकों के अध्ययन से हम यह कह सकते हैं हमारे समाज में दाम्पत्य से संबंधित विचारों में बदलाव देखने को मिला है| पहले स्त्री अपने पति की विरोधता नहीं करती थी और सारी ज़िन्दगी उसके जुल्मों को चुपचाप सहन करती रहती थी, लेकिन आज की स्त्री में बदलाव आया है| वह अपने अधिकारों प्रति सजग है| उसे अच्छे बुरे की पहचान करने के बाद अपने पति के आगे बोलने की हिमत भी रखती है| बदलते दाम्पत्य संबंध में हम अकेले पुरुष को जिम्मेदार नहीं मान सकते इसमें स्त्री भी उतनी ही भागीदारी है जितना पुरुष| इस प्रकार समय और स्थिति के अनुसार समाजशास्त्रीय बदलाव हुआ है|

सन्दर्भ सूची

1. मजूमदार, डी.एन, रायचौधरी: 'स्त्री संघर्ष का इतिहास'
2. राकेश, मोहन: 'आधे-अधूरे'
3. नारायण, डॉ. लक्ष्मी 'मादा कैक्टस'
4. कुमार, सुशील: 'चार यारों के यार'
5. तिवारी, डॉ. नगेन्द्रनाथ: 'साठोतरी हिन्दी नाटकों में दाम्पत्य संबंध'
6. गार्गी, बलवंत: 'लोहा कुट'
7. जसूजा, गुरचरन सिंह 'परियां'